बिंदु मिलाओ

रंग भरो

कहानी

साहूकार का बटुआ

एक शांत गांव में रहने वाला साहूकार अपने धन और लेन-देन के लिए दूर-दूर तक जाना जाता था. एक दिन किसी काम से लौटते समय उसका रुपयों से भरा बटुआ रास्ते में कहीं गिर गया. जब उसे इसका पता चला तो वह परेशान हो उठा. बटुए में एक हजार रुपये रखे थे. उसने गांव में घोषणा करवाई कि जो भी उसका बटुआ लौटाएगा, उसे सौ रुपये का इनाम दिया जाएगा.

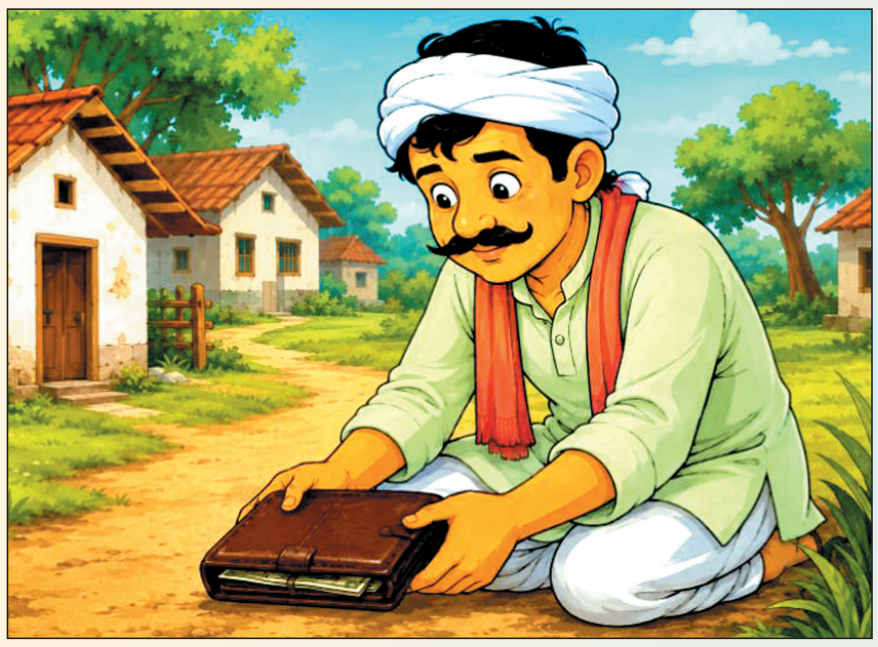

उसी गांव का एक गरीब किसान खेत की ओर जाते समय उस बटुए पर नजर पड़ गई. उसने बटुआ खोला तो उसमें रुपये भरे हुए थे. किसान की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. यदि वह चाहता तो उन रुपयों को अपने पास रख सकता था, लेकिन उसके संस्कार और ईमानदारी ने उसे ऐसा करने से रोक दिया. उसने बिना देर किए बटुआ लेकर सीधे साहूकार के घर पहुंच गया.

साहूकार ने बटुआ हाथ में लेते ही राहत की सांस ली. उसने रुपये गिने तो पूरे एक हजार रुपये मौजूद थे. अब किसान को इनाम देने की बारी थी. लेकिन लालच ने साहूकार की नीयत बदल दी. उसने सोचा कि यदि वह किसान पर ही आरोप लगा दे तो सौ रुपये देने से बच जाएगा.

साहूकार ने किसान से कहा, तुमने बहुत चालाकी की है. इनाम के सौ रुपये तो पहले ही निकाल लिए. मेरे बटुए में ग्यारह सौ रुपये थे, लेकिन अब केवल एक हजार ही हैं. यह सुनकर किसान हैरान रह गया. उसने शांत स्वर में कहा कि उसने बटुए से एक पैसा भी नहीं निकाला. लेकिन साहूकार अपनी बात पर अड़ा रहा. दोनों के बीच बहस बढ़ती गई.

आखिरकार किसान ने कहा कि इस विवाद का फैसला गांव के सरपंच करेंगे. दोनों सरपंच के सामने पहुंचे. सरपंच ने पहले किसान और फिर साहूकार की पूरी बात ध्यान से सुनी. अनुभवी सरपंच तुरंत समझ गए कि मामला क्या है. उन्होंने साहूकार से एक ही सवाल पूछा, क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम्हारे बटुए में ग्यारह सौ रुपये थे.

साहूकार ने बिना सोचे-समझे तुरंत जवाब दिया, हाँ, मुझे पूरा विश्वास है. सरपंच मुस्कुराए और बोले, यदि तुम्हारे अनुसार तुम्हारे बटुए में ग्यारह सौ रुपये थे और इस बटुए में केवल एक हजार रुपये हैं, तो स्पष्ट है कि यह बटुआ तुम्हारा नहीं हो सकता. इसलिए इस बटुए पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं बनता. इसके बाद सरपंच ने वह बटुआ उसी ईमानदार किसान को सौंप दिया. साहूकार देखते ही रह गया.

उसे समझ में आ गया कि अपने लालच और झूठ के कारण उसने न केवल इनाम बचाने की कोशिश में असफलता पाई, बल्कि पूरा बटुआ भी गंवा बैठा. गांव के लोगों ने सरपंच के फैसले की सराहना की. सभी ने किसान की ईमानदारी की प्रशंसा की और साहूकार की बेईमानी की आलोचना की. यह घटना पूरे गांव में चर्चा का विषय बन गई और लोगों के लिए एक मिसाल बन गई कि सच्चाई और ईमानदारी की जीत निश्चित होती है. यह प्रेरक प्रसंग हमें सिखाता है कि धन का लालच इंसान की बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है. झूठ बोलकर कुछ समय के लिए लाभ तो मिल सकता है, लेकिन अंत में सत्य की ही विजय होती है. ईमानदार व्यक्ति भले ही गरीब हो, लेकिन उसका चरित्र ही उसकी सबसे बड़ी पूंजी होता है. वहीं लालच और बेईमानी अंततः सम्मान, विश्वास और संपत्ति—तीनों छीन लेते हैं.

सीख

ईमानदारी सबसे बड़ा धन है, जबकि झूठ और लालच का परिणाम हमेशा नुकसान और अपमान होता है.

प्रेरक प्रसंग

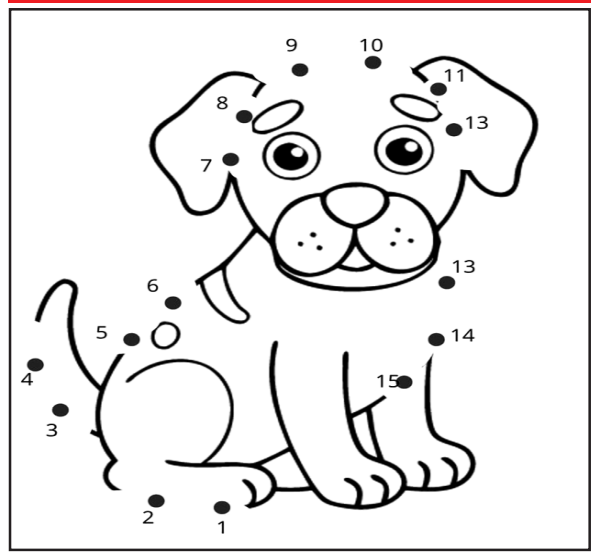

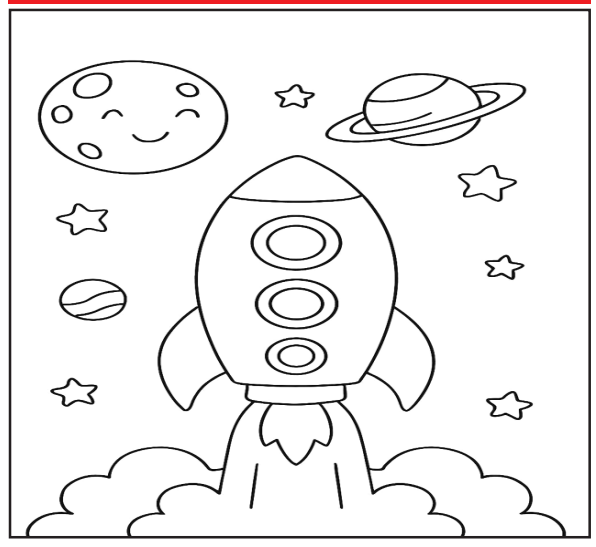

चाचा नेहरू ने गढ़ा आधुनिक भारत का भविष्य

पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर 1889 को इलाहाबाद में हुआ. उनके पिता मोतीलाल नेहरू देश के प्रसिद्ध वकील थे, जबकि माता स्वरूप रानी नेहरू धार्मिक और संस्कारी थीं. बचपन से ही नेहरू पढ़ाई में तेज और जिज्ञासु स्वभाव के थे. उन्होंने इंग्लैंड के प्रतिष्ठित संस्थानों में शिक्षा प्राप्त की और कानून की पढ़ाई पूरी की. विदेश से लौटने के बाद उनके सामने एक आरामदायक जीवन जीने का अवसर था, लेकिन उन्होंने देश की सेवा का मार्ग चुना. महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हो गए. अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष करते हुए उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा. जेल की कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना समय पढ़ने और लिखने में लगाया. इसी दौरान उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनमें डिस्कवरी ऑफ इंडिया और ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री प्रमुख हैं.

15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने. उन्होंने ऐसे भारत का सपना देखा जो शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और उद्योग के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो. उनके नेतृत्व में बड़े बांध, इस्पात संयंत्र, वैज्ञानिक संस्थान और उच्च शिक्षा के प्रतिष्ठित संस्थानों की स्थापना की गई. उनका मानना था कि आधुनिक भारत का निर्माण ज्ञान और विज्ञान की शक्ति से ही संभव है.

नेहरू बच्चों से विशेष प्रेम करते थे. वे मानते थे कि आज के बच्चे ही कल का भविष्य हैं. इसलिए उन्होंने शिक्षा और बाल विकास को हमेशा प्राथमिकता दी. उनके जन्मदिवस 14 नवंबर को पूरे देश में बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है. पंडित जवाहरलाल नेहरू का जीवन हमें सिखाता है कि सफलता केवल बड़े सपने देखने से नहीं मिलती, बल्कि उन सपनों को पूरा करने के लिए निरंतर मेहनत, अनुशासन और समर्पण की आवश्यकता होती है. उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि सच्चा नेतृत्व वही है जो व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिए कार्य करे.

रंग-बिरंगी तितली क्यों है प्रकृति की खास मेहमान

तितली पृथ्वी पर पाए जाने वाले सबसे सुंदर और उपयोगी कीटों में से एक है. दुनिया भर में तितलियों की लगभग 20,000 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं. भारत में भी हजारों प्रजातियां विभिन्न जंगलों, पहाड़ों और बगीचों में देखने को मिलती हैं. हर प्रजाति के पंखों का रंग और डिजाइन अलग होता है, जो उसे पहचान दिलाता है. तितली का जीवन चार चरणों में पूरा होता है. सबसे पहले मादा तितली पौधों की पत्तियों पर अंडे देती है. कुछ दिनों बाद इन अंडों से कैटरपिलर निकलते हैं. कैटरपिलर लगातार पत्तियां खाकर तेजी से बढ़ता है. इसके बाद वह अपने चारों ओर एक कठोर खोल बना लेता है, जिसे प्यूपा या कोष कहा जाता है. इसी कोष के भीतर उसका पूरा शरीर बदलता है और कुछ समय बाद उसमें से रंग-बिरंगी तितली निकलती है. इस पूरी प्रक्रिया को पूर्ण रूपांतरण कहा जाता है.

तितलियों के पंख वास्तव में लाखों सूक्ष्म रंगीन शल्कों से बने होते हैं. यही शल्क सूर्य की रोशनी पड़ने पर अलग-अलग रंगों की चमक पैदा करते हैं. आश्चर्य की बात यह है कि तितलियां अपने पैरों से स्वाद का अनुभव कर सकती हैं. जब वे किसी फूल या पत्ती पर बैठती हैं, तो पहले अपने पैरों से ही यह पहचान लेती हैं कि वह उनके लिए उपयुक्त है या नहीं. तितलियां फूलों का रस पीते समय एक फूल से दूसरे फूल तक पराग पहुंचाती हैं. इस प्रक्रिया को परागण कहा जाता है, जो फलों, सब्जियों और कई पौधों के उत्पादन के लिए बेहद आवश्यक है. इसलिए तितलियों को प्रकृति का महत्वपूर्ण सहयोगी माना जाता है. किसी क्षेत्र में तितलियों की संख्या वहां के पर्यावरण की गुणवत्ता का संकेत देती है. जहां स्वच्छ हवा, हरियाली और विविध प्रकार के पौधे होते हैं, वहां तितलियों की संख्या अधिक होती है. यदि तितलियां कम होने लगें, तो यह पर्यावरण में हो रहे बदलाव का संकेत हो सकता है.

भूल भुलैया

जानकारी

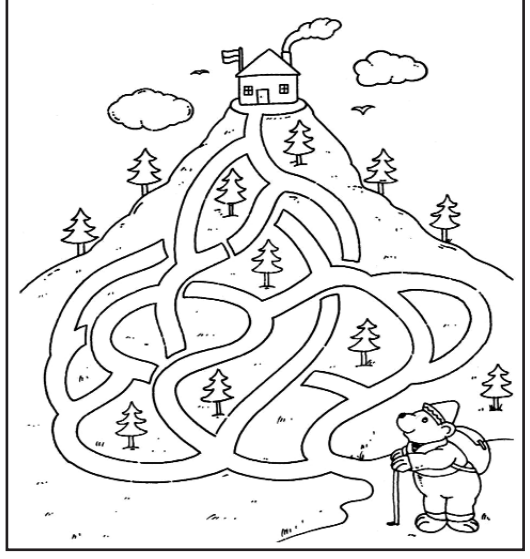

सबसे ताकतवर शिकारी : बाघ

बाघ दुनिया की सबसे बड़ी जंगली बिल्ली प्रजाति है और अपनी शक्ति, फुर्ती तथा तेज़ इंद्रियों के लिए प्रसिद्ध है. भारत में सबसे अधिक जंगली बाघ पाए जाते हैं, इसलिए देश को बाघों का सबसे बड़ा प्राकृतिक आवास माना जाता है. वर्ष 1973 में शुरू किए गए प्रोजेक्ट टाइगर ने बाघों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

बाघ की सबसे खास पहचान उसके शरीर पर बनी काली धारियां हैं. दिलचस्प बात यह है कि कोई भी दो बाघ एक जैसी धारियों वाले नहीं होते. वैज्ञानिक इन्हीं धारियों के आधार पर अलग-अलग बाघों की पहचान करते हैं. इतना ही नहीं, बाघ की त्वचा पर भी यही धारियां होती हैं, केवल उसके बालों पर ही नहीं. बाघ एक मांसाहारी और अत्यंत कुशल शिकारी है. यह अपने शिकार के बहुत करीब पहुंचने तक चुपचाप छिपा रहता है और फिर अचानक तेज़ छलांग लगाकर हमला करता है. बाघ की रात में देखने की क्षमता इंसानों की तुलना में कई गुना बेहतर होती है, जिससे वह अंधेरे में भी आसानी से शिकार कर सकता है. बहुत कम लोग जानते हैं कि बाघ एक बेहतरीन तैराक भी होता है.

जहां अधिकांश बिल्लियां पानी से दूर रहती हैं, वहीं बाघ नदियों और तालाबों में आराम से तैर सकता है. गर्मी के दिनों में वह घंटों पानी में रहकर अपने शरीर को ठंडा रखता है. बाघ जंगल के खाद्य-श्रृंखला का शीर्ष शिकारी है. यह हिरण, जंगली सूअर और अन्य शाकाहारी जीवों की संख्या को संतुलित रखता है.

यदि बाघ न रहें, तो शाकाहारी जीवों की संख्या बहुत बढ़ सकती है, जिससे जंगलों की वनस्पति को नुकसान पहुंचेगा और पूरा पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ सकता है. आज बाघों के सामने जंगलों की कटाई, अवैध शिकार और प्राकृतिक आवास के सिकुड़ने जैसी चुनौतियां हैं.

कविता

बांसुरी वाला

बांसुरी वाला आया रे,
मीठी धुन वह लाया रे.
सुनकर नाचे चिड़िया रानी,
झूम उठी हर फूलों की डाली.

धीरे-धीरे सुर जब बजे,
खुश हो जाएँ बच्चे सजे.
प्यार, खुशी का दे संदेश,
बांसुरी वाला सबसे विशेष.

बूझो तो जानें

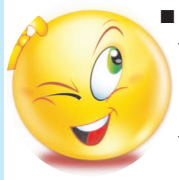

- 1.एक डिब्बे में रहता हूँ,
  दुनिया भर की बातें कहता हूँ.
  बटन दबाते ही बोल पड़ता,
  बताओ मैं कौन कहलाता हूँ?

  उत्तर - रेडियो

- न पंख हैं, न प
  फिर भी आसमान में उड़ता हूँ.
  बच्चों का हूँ प्यारा साथी,
  हवा के संग झूमता हूँ.

  उत्तर - पतंग

- काला हूँ पर कौआ नहीं,
  मीठा हूँ पर गुड़ नहीं.
  गर्मी में सबको भाता हूँ,
  बताओ मैं कौन सही?

  उत्तर - जामुन

- जितना काटो उतना बढ़ूँ,
  घर-घर में मैं काम आऊँ.
  बिना मेरे खाना फीका,
  बताओ मैं क्या कहलाऊँ?

  उत्तर - धनिया (हरी पत्ती)

हंसी-ठिठोली

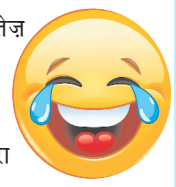

- टीचर: बताओ, सबसे तेज़ क्या दौड़ता है?
  बच्चा: छुट्टी की घंटी सुनते ही बच्चे!
- मम्मी: बेटा, होमवर्क पूरा हुआ?
  बेटा: हाँ मम्मी, अब बस टीचर को समझाना बाकी है.
- टीचर: अगर तुम्हारे पास 10 आम हैं और मैं 3 ले लूँ, तो कितने बचेंगे?
  बच्चा: 10 ही बचेंगे.
  टीचर: कैसे?
  बच्चा: क्योंकि मैं आपको दूँगा ही नहीं!
- पापा: इतने नंबर कम क्यों आए?
  बेटा: पापा, सवाल तो सारे सही थे... बस जवाब अलग हो गए.
- टीचर: ऐसा कौन-सा फल है जो कभी गुस्सा नहीं करता?
  बच्चा: संतरा. टीचर: क्यों?
  बच्चा: क्योंकि वह हमेशा 'संत' रहता है!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 1.आसमान में बादल, 2.वैन की छत पर रखा सामान 3, समुद्र में नाव 4.वैन की हेडलाइट, 5.सामने रखा बैग. 6. दाईं ओर का पत्थर, 7. झाड़ी का आकार, 8. सूरज का चेहरा